दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 63 ❑ अंक-01 ❑ दिल्ली ❑ अक्तूबर (प्रथम) 2024 ❑ मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश का प्रादेशिक सम्मेलन

सामाजिक न्याय के लिए जाति जनगणना बहुत जरूरी

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश की जिला शाखा सिरोही के तत्वावधान में प्रदेश स्तरीय एकदिवसीय साहित्यकार सम्मेलन झुलेलाल सिन्धु भवन सिरोही में 29 सितम्बर, 2024 को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल समुनाक्षर ने की। श्री गणेश शिवमठ, शिवनाथ पुरा, सांचौर के महन्त श्री गणेश नाथ जी महाराज और अकादमी के राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष महन्त आत्माराम उपाध्याय के सान्निध्य में सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। सम्मेलन में विशिष्ठ अतिथि के रूप में सहभागिता करने वालों में प्रमुख थे–प्रो. जयपाल सिंह, प्रदेशाध्यक्ष, भा.द.सा. अकादमी, उत्तराखण्ड, अकादमी के राष्ट्रीय महासचिव श्री जय सुमनाक्षर, अकादमी के राष्ट्रीय सचिव श्री बाबूलाल 'निर्मल', डा. भरतभाई परमार एम.डी. हिन्द मल्टीस्पेशलिटी होस्पीटल, पालनपुर (गुजरात), श्री हेमन्त मीमरोठ, एडवोकेट (जयपुर), श्रीमती हेमलता कांसोटिया, प्रदेशाध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ) भा.द.सा. अकादमी, राजस्थान, डा. राजेश कुमार मुख्य चिकित्सा–धिकारी, सिरोही।

सम्मेलन का प्रारम्भ बाबा साहब डा. अम्बेडकर, भगवान बुद्ध व महात्मा जोतीबा फुले के चित्रों पर माल्यार्पण करके हुआ।

इस एकदिवसीय सम्मेलन में अपना अध्यक्ष भाषण शुरू करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने कहा कि हम सम्पूर्ण दलित समाज की ओर से सिरोही के महाराजा श्री रघुवीर सिंह देवड़ा का स्मरण करके उनका धन्यवाद करना चाहते हैं जिन्होंने बाबा साहब डा. अम्बेडकर, महिलाओं को बराबर के अधिकार दिये जाने के हिन्दू कोड बिल कानून के मुद्दे पर कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था और सरकारी मकान व वाहन लौटा दिया था। उस समय बेघर हुए बाबा साहब डा. अम्बेडकर को अपनी दिल्ली के 26 अलीपुर रोड पर स्थित कोठी को रहने के लिए दे दिया था और वहीं जीवित रहते हुए 6 दिसम्बर, 1956 को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अन्तिम सांस ली थी। आज उसी कोठी की जमीन पर बाबा साहब का राष्ट्रीय स्मारक बना हुआ है जो बाबा साहब की अमर स्मृति है। यह सब सिरोही के महाराजा की दरियादिल के कारण हुआ। हम नतमस्तक होकर उनको नमस्कार करते हैं, अभिनन्दन करते हैं।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि राजस्थान का भूभाग इतिहास से भरा पड़ा है। यहां की भाषा, धर्म, आस्था, संस्कृति भी विशिष्ठ है। कभी यह बौद्ध धर्म का केन्द्र था। नागौर उसका मुख्य केन्द्र था। बौद्ध धर्म के बहुत ही चिन्ह आज भी राजस्थान में मौजूद हैं। यहां के आश्रम, मठ, मन्दिरों में उनकी छाया

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जन्म दिवस की बधाई

हिमायती हिन्दी पाक्षिक

के प्रकाशन दिवस (2 अक्तूबर, 1962) 63वें वर्ष में प्रवेश करने पर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

स्थापना दिवस

(6 अगस्त, 1984)

41वें वर्ष में प्रवेश करने पर हिमायती के स्वामी व सम्पादक तथा भारतीय दलित साहित्य अकादमी के

राष्ट्रीय अध्यक्ष

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

(जन्म : 6 अक्तूबर, 1940)

के 85वें वर्ष में प्रवेश करने **पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।**

सम्पादकीय

दलित साहित्यकार और दलित संस्कृति

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

दलित साहित्य केवल दलितों की दुर्दशा का दर्पण ही नहीं है, बल्कि उनके गौरवमयी इतिहास, दलन व शोषण का दिग्दर्शक और उज्ज्वल भविष्य का प्रेरक है, उद्‌बोधक है, मार्गदर्शक है। दलित साहित्यकार का प्रमुख कार्य ऐसे दलित साहित्य का सृजन करना है जो दलितों को उनके गौरवमयी इतिहास से जोड़े और दलितों को वर्तमान दुर्दशा के लिए दोषी उनके दुश्मनों से अवगत कराये, उनके षड्यन्त्रकारी मायाजाल से सचेत करे तथा उनकी हीन भावना व संकीर्णता दूर कर उनमें संवेदना और जनचेतना जागृत करे।

दलित साहित्यकार का प्रमुख कार्य जहां दलितों को जगाने और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार करना है, वहीं उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अन्यायी, अत्याचारी और जात्याभिमान में अन्धे व्यक्ति को भी यह अहसास कराये कि उसका व्यवहार, भावना और मानसिकता मानवता विरोधी है, समाज विरोधी है और राष्ट्र विरोधी है।

स्वतन्त्र भारत में अब न तो किसी को गुलाम बनाए रखा जा सकता है और न ही किसी से धर्म, जाति और वर्ण व्यवस्था के नाम पर बेगारी या गुलामी करायी जा सकती है। संवैधानिक रूप से देश के सभी नागरिक समान हैं। ऐसी स्थिति में किसी के अधिकारों का हनन करना और उन्हें समता, सम्मान और न्याय न देना असंवैधानिक ही नहीं, मानवता और राष्ट्र के विरुद्ध भी है।

दलित संस्कृति श्रम संस्कृति है, याचक संस्कृति नहीं। दलितों ने सदैव श्रम की कमाई खाई है, कभी निठल्ले पड़े मांग कर नहीं खाया। इस मायने में हम कमेरे हैं, निठल्लू या लूटेरे नहीं। पर निठल्ले और लूटेरों ने हमारा और हमारे श्रम का शोषण ही किया है। 'बेगारी' कहकर उसकी लूट ही की है। यह श्रम संस्कृति सर्वोपरि है, इसे हमें संजोकर रखना है।

सैकड़ों बादशाह आये, शहंशाह आए, राजे–महाराजे आए। गौरी–गजनी, खिलजी, लोदी, तुगलक, कनिष्क, हूण, मुगल आए, सब इस मिट्टी में आत्मसात हो गए। सभी ने हमें दला, कुचला और हमारा शोषण किया पर श्रम संस्कृति के बल पर दलित आज तक जीवित हैं और उनकी दलित–संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है।

इस दलित संस्कृति का आधार स्तम्भ अब तक रहा है–कर्तव्य, सिर्फ कर्तव्य पालन। इस कर्तव्य को पूरा किया हमने सदैव अपने श्रम से सींचकर, नत मस्तक होकर। अपनी कर्तव्य परायणता हमने हमेशा निभाई, कर्म को स्वीकार करके। अपने इस कर्तव्य पालन के सामने हमने कभी भी अपने अधिकारों की ओर नहीं निहारा। इसलिए अधिकारों के अभाव में सिर्फ कर्तव्य परायणता ने 'भीरूता' और 'संवेदन हीनता' को जन्म दिया। उधर कर्तव्य विहीन अधिकारों ने निरंकुशता और अधिनायकवाद को जन्म दिया। बिना अधिकारों के कर्तव्य का बोझा ढोते हुए मूक और निर्बल बने हम सदियों से दले जाते रहे, और उधर बिना कर्तव्यों के अधिकारों के बल पर निरकुंश बने वे हमें बेगारी,

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्‌घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय का शेष....दलित साहित्यकार और दलित संस्कृति

गुलामी और अन्याय की चक्की में पीसते रहे। यही 'दलित संस्कृति' का अधूरापन था। इस अधूरेपन में भी आज तक हम जीवित रहे हैं, इतिहास–पुरुष बने हैं, तो आज अपने अधिकारों को अर्जित कर हमें 'दलित संस्कृति' को परिपूर्ण करना है। हम सम्मान चाहते हैं, समता चाहते हैं और न्याय चाहते हैं। देश की सत्ता और सम्पदा में बराबर हिस्सेदारी चाहते हैं। यह सब हम बिना किसी रक्तपात के सम्मान लेना चाहते हैं, बिना किसी का कोई अधिकार हड़पे या किसी को बेइज्जत किए। इसके लिए हमारे पास हथियार है, दूसरों को अहसास कराने का, जो आज तक हमारे अधिकारों का हनन करते रहे, उपभोग करते रहे। अहसास कराने पर भी अगर वह संवेदनशील नहीं होता तो वह हमें अधिकारों के लिए संगठित होकर संघर्ष के मार्ग की ओर बढ़ने के लिए बाधित करता है। और फिर दलित संस्कृति के दो धुरों को पूरा करने के लिए हमें यह भी स्वीकार्य होगा।

आज हम दलित संस्कृति और उसके वाहक दलित साहित्य से वैचारिक क्रान्ति फैलाकर, लोगों की संकीर्णता दूर कर संवेदनाएं जागृत कर सामाजिक बदलाव लाना चाहते हैं। इसके लिए हमें अपनी वर्तमान पीढ़ी को तैयार करना होगा जिससे कि वह भविष्य में किसी की भी किसी तरह की दासता, गुलामी, अन्याय, अत्याचार या तिरस्कार सहने के लिए तैयार न हों। हम समाज और सत्ता पूर्ण बदलाव चाहते हैं, और इसके बिना सामाजिक न्याय की कल्पना करना अपने को धोखा देना है। इसके लिए हमें अपने नये दलित मसीहाओं से भी सावधान रहना होगा जो बिना सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक बदलाव के सिर्फ चन्द लोगों को नौकरी में हिस्सेदारी को ही सामाजिक न्याय का नाम दे रहे हैं। सामाजिक न्याय का अर्थ है देश की प्रत्येक चीज में, चाहे वह धन हो, धरती हो या सम्पदा हो या राजगद्दी हो उसमें बराबर की हिस्सेदारी। इसके साथ ही सभी को बराबर का सम्मान का बटवारा, चाहे वह एक ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुआ हो या किसी दलित महिला के उदर से।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय', 'अत्तो दीपो भव', 'सोहम' – दलित संस्कृति के उद्घोषित आधार हैं। विश्व के हर कण में हमने जीव के दर्शन किए हैं। ध्यान और समाधि हमारी आध्यात्मिक पद्धति है जिसके माध्यम से सूक्ष्म से सूक्ष्म और अनन्त आकाश के रहस्य का भेद खोला है। विवेक का तृतीय नेत्र दलित संस्कृति का अभिन्न अंग है। सिन्धुघाटी की सभ्यता दलित संस्कृति का प्रथम परिचय है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, काली बंगा की सभ्यता के चिन्ह, इसी दलित संस्कृति की उज्ज्वलता के प्रतीक हैं।

'निर्बल को न सताइये' और 'अहिंसा परमो धर्मः' दलित संस्कृति की संहिता के शीर्षस्थ वाक्य हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तंत्र देवता' तथा 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादीप गरीयसी' हमारी मातृ श्रद्धा और नारी सम्मान के परिचायक हैं।

विश्व में सर्वोपरि सभ्यता के सृजक हम रहे हैं। हस्तकला, वास्तुकला, चित्रकला और भवन निर्माण कला की सीख संसार को हमने दी है। बड़े– बड़े नगर और अभेध विशालकाय किलों के हम मालिक रहे हैं। शक्ति और चिन्तन में हमारी कोई बराबरी नहीं कर सका। हमारी इस दलित संस्कृति का इतिहास आज भी वेदों के सूक्तों में झांक रहा है। मिट्टी के टीलों में दबा गौरवमयी इतिहास निरन्तर उजागर हो रहा है। इस पर सभी दलितों को गर्व होना चाहिए। अपनी इस दलित संस्कृति को उजागर करने के लिए दलित साहित्यकारों को अपनी लेखनी निरन्तर चलाते रहना होगा। हम किसी व्यक्ति को गाली देकर सामाजिक बदलाव नहीं ला सकते। वैसे भी किसी को गाली बकना या अपशब्द कहना दलित संस्कृति के विरुद्ध है। जिसने भी दलितोत्थान के लिए थोड़ा सा भी प्रयास किया है, हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए।

हम बाबा साहब डा. अम्बेडकर के अनुयायी हैं और देश में अम्बेडकरवाद लाना चाहते हैं पर कभी भी दूसरों का अपमान या गाली देकर नहीं। फिर हम कभी भी बाबा साहब से बड़े नहीं हो सकते। वे जिनकी 'इज्जत' करते थे, हम अगर उनकी 'इज्जत' न भी करें तो उन्हें गाली देकर अपमानित न करें। इससे हमारी दूषित मानसिकता ही नहीं झलकेगी, बल्कि उस महापुरुष के नाम पर भी धब्बा लगेगा जिसके हम अनुयायी हैं।

सैंकडों साल पहले किसी के पूर्वजों ने हमारे पूर्वजों के साथ अन्याय, अत्याचार या दुराचार किया है, तो इसका मतलब यह नहीं कि अब उनकी सन्तानों से भी हम बदला लेने के लिए वैसा ही व्यवहार करें। हां, आज समय अन्याय, अत्याचार और अपमान सहने का नहीं है। अगर कोई ऐसा करता है तो उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। हमें सामाजिक बदलाव के लिए संघर्ष करना होगा। कभी किसी को कोसने या गाली देने से उल्टा हम उसे उत्तेजित करके उसका और अधिक महत्व बढ़ाते हैं। आज

गांधी को गाली बककर उसे फिर जीवित कर दिया है और उनके अनुयायियों में गांधीवाद के लिए फिर से सोच जगा दी है।

दलित साहित्यकारों को ऐसे विवेकहीन सत्ता के भूखे और डा. अम्बेडकर और दलितों के नाम को बट्टा लगाने वाले राजनेताओं से सावधान रहना चाहिए। दलितों का एक चरित्र है, अस्मिता है और मर्यादा है। हमारे चरित्र के दायरे में किसी का चरित्र हनन या अपमान करना नहीं आता। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी ने सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध खुलकर बोला और समाज में समता लाने का काम किया। उनकी सेवाओं को नक्कारना कृतघ्नता होगी।

फिर शब्दों का महत्व और प्रसांगिकता समय–समय पर बदलती रहती है। गांधी जी ने जब अछूतों को 'हरिजन' नाम दिया था, उस समय दलित जातियों को संगठित नाम के रूप में 'हरिजन' शब्द प्रसांगिक और महत्वपूर्ण था और इसको सार्थक बनाने के लिए गांधी जी ने 'हरिजन सेवक संघ' संस्था की स्थापना की। 'हरिजन' पत्र संचालित किया, हरिजनों की बस्ती में रहना शुरू किया और अस्पृश्यता निवारण को कांग्रेस की सदस्यता के नियमों में प्राथमिकता दी। भंगी मुक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत अपना मैला खुद साफ करने का अभियान शुरू किया। दलितों को शिक्षा–संस्थानों, सरकारी कार्यालयों और राजनीति में प्राथमिकता दी गई। इसलिए गांधी जी और उनके दलित कल्याण कार्यों को केवल उनके लिए 'हरिजन' नाम के कारण नक्कारना दलितों की कृतघ्नता और ऐतिहासिक अज्ञानता ही कहा जाएगा।

हम गांधी जी या गांधीवाद के हिमायती नहीं हैं, पर हमें साहित्यकार के नाते उनके कार्यों को महान विवेकशील तीसरे नेत्र से देखकर तो चलना होगा। हमें बाबा साहब की विद्वता और उनके महान कार्यों पर गर्व है, पर उन्हें इस 'गर्वशाली पात्र' बनाने में जिन–जिन लोगों की सीधी और सक्रिय भूमिका रही, उनके प्रति भी नत–मस्तक न होना हमारे लिए आत्मघात और अपमानजनक होगा।

इतिहास के आईने में देखें तो बालक 'भीमराव अम्बाबडे' को भीमराव अम्बेडकर नाम देने वाला व्यक्ति उनका क्लास–टीचर ब्राह्मण अध्यापक था, विद्यालय काल में अछूत होने पर अपमानित होने पर उन्हें सान्त्वना देने वाला और उनका उत्साह बढ़ाने वाला भी ब्राह्मण ही था, बालक भीमराव को विद्यार्थी जीवन में 'गीता' की प्रति भेंट कर जीवन में सक्रियता भरने वाला भी उनका ब्राह्मण अध्यापक ही था, बाबा साहब को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने वाले बड़ौदा के महाराज गायकवाड़ थे, जो स्वयं उच्च जाति से थे। यही नहीं, बाबा साहब डा. अम्बेडकर को मन्त्रिमण्डल मं शामिल कराकर कानून मन्त्री बनाने वाले और संविधान निर्मात्री समिति का अध्यक्ष नियुक्त कराने वालों में गांधी जी प्रमुख थे। बाबा साहब को राज्य सभा के सदस्य के रूप में पश्चिमी बंगाल से अपने कोटे से चुनकर भेजने वाले मुस्लिम भाई थे। ऐसी स्थिति में बाबा साहब के हमारे ऊपर जो अहसान है, उतने ही अहसान हमें उन लोगों के स्वीकारने चाहिए जिन्होंने उन्हें हमारे अराध्य देव बनाया। बाबा साहब की महानता इसी में है कि हम उन लोगों का सम्मान करना सीखें जिनका बाबा साहब सम्मान करते थे। •

पृष्ठ 1 का शेष....सामाजिक न्याय के लिए जाति जनगणना बहुत जरूरी

देखने को मिल जायेगी।

राजस्थान प्रदेश रजवाड़ों में बंटा हुआ था और अपनी झूठी शान बनाये रखने के लिए वे आपस में ही लड़ते रहते थे या विदेशी बादशाहों की तिमारदारी करते थे। उन्होंने कभी भी अछूत व दलित जातियों की उन्नति की ओर ध्यान नहीं दिया। वे अपनी राजगद्दी बचाने के लिए पूरी तरह 'मनुस्मृति' विधानों पर चलते थे और पंडा, पुजारी, पुरोहित और ब्राह्मण गुरुओं पर विश्वास करते थे और उनके बताये मार्ग पर चलते थे। एक ओर अछूत–शूद्रों से नफरत की जाती थी तो दूसरी ओर उन्हीं पोंगापंथी ब्राह्मण ज्योतिष्यों व पुरोहितों के कहने पर अछूतों की नरबलि ली जाती थी। जोधपुर के किले का निर्माण करते हुए उसकी नींव में अछूत–शूद्र–दलित राजाराम मेघवाल की बलि दी गई। बावड़ी व बांध बनवाने में दलित वीर युवक गूगा मेड़ी की बलि दी गई। राजा–महाराजाओं ने अपने हर निर्माण में ब्राह्मण ज्योतिष्यों के कहने पर अछूत दलितों की जबरन बलि ली जबकि अछूत–दलितों की शुरू से ही अपने स्वामी के प्रति वफादारी रही। हिन्दू धर्म की पताका महाराणा प्रताप का भले ही राजपूतों ने साथ छोड़ दिया, पर दलित, अछूत, आदिवासियों ने उनका साथ दिया और उन्हें पुनः महाराजा की गद्दी पर आसीन किया। महाराजा राणा सांगा को जब 80 घाव लगे थे और सब राजपूत राजा उनका साथ छोड़कर चले गये थे तो उस समय अछूत–आदिवासी दलितों ने उनका तन–मन–धन से साथ दिया था, पर उन्हें कभी सम्मान नहीं मिला। हल्दी घाटी युद्ध दलितों की शौर्य गाथा का इतिहासिक दस्तावेज है। दलित महिला पन्ना धाय ने दुश्मनों को अपना पुत्र बलिदान में देकर युवराज उदयसिंह की जान बचाई थी।

दलितों का राजस्थान में धार्मिक समभाव व भाईचारा बढ़ाने में भी बड़ा योगदान रहा है। गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति के सामने तनमस्तक होकर चित्तौड़ की

महारानी झालीबाई और उनकी पुत्रवधु महारानी मीराबाई ने उनसे दीक्षा लेकर वे उनकी शिष्या बनीं। इस तरह गुरु रविदास जी ने अपनी झोंपड़ी की पगडंडी से राजमहलों को जोड़ा था। महारानी के निमंत्रण पर गुरु जी चित्तौड़ गढ़ गये थे जहां उनका देहावसान हो गया। गुरुजी की स्मृति में वहां उनकी छतरी व पदचिन्ह अंकित है। मेड़ता में मीरा मन्दिर गुरु रविदास जी को समर्पित है जहां आज भी प्रातः की आरती के बाद गुरु भक्त रविदासी चमार टोली से आये 'रोट' को प्रसाद के रूप में बांटकर मंदिर के दर्शन कपाट खुलते हैं। इसी तरह जैन धर्म के महान तीर्थस्थल श्री महावीरजी का नाता चमार जाति के परिवार से जुड़ा है जहां मन्दिर पर दूध के रूप में आया चढ़ावा दूध प्रतिदिन नियमित रूप से चमार परिवार को भेजा जाता है। कहा जाता है कि महावीर जी की जमीन में गड़ी मूर्ति की खोज इसी परिवार की गाय ने अपना दूध उस जगह पर टपकाकर की थी। वैसे भी जैन धर्म में सभी 25 तीर्थांकारों का सम्बन्ध नाथ सम्प्रदाय से रहा है क्योंकि सभी के नाम 'नाथ' से जुड़े हैं और 'नाथ' सम्प्रदाय से दलित–आदिवासियों का प्राचीन में जुड़ाव रहा है।

राजस्थान में शूद्र, अछूत, दलितों के इतने बलिदान व अहसान होते हुए आज भी उन्हें ढेड, चूहड़ा–चमार बोलकर अपमानित किया जाता है। उनकी बारात को घोड़ी पर दूल्हे को बैठाकर नहीं निकाल सकते, उनके कुंये, तालाब, बावड़ी पर नहीं चढ़ सकते, मन्दिर, नदी, घाट, श्मशानघाट, चौपाल पर चढ़ने की मनाई है। स्कूल, कालेज, सरकारी दफ्तरों में भी उनके साथ भेदभाव, छुआछूत, जातिगत दुर्व्यवहार आज भी जारी है।

इन सबके विपरीत भारतीय दलित साहित्य अकादमी पिछले 40 साल से कार्यरत है और हर जन हर घर में वैचारिक क्रान्ति लाने में जुटी है। भगवान बुद्ध ने कहा था–'अत्तो दीपो भव' अपना दीपक स्वयं बनो–दूसरों के प्रकाश की चाह न करो। उन्होंने अपने शिष्यों को भी कहा था–'चरैवेति चरैवेति भंत्ते–बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय।' हमारे सन्त–महात्माओं को जन जागरण के कार्यों के लिए आगे–आगे बढ़ना चाहिए तभी बहुजन दलित–शोषितों का कल्याण होगा।

भगवान बुद्ध ने शिक्षा पर जोर देते हुए सभी बौद्ध विहारों का बिना भेदभाव के सभी जाति के लोगों के लिए खोल दिया था। उस समय शिक्षा के रूप में महान क्रान्ति हुई थी। गुरु रविदास जी ने भी शिक्षा पर जोर देते हुए कहा था–अविद्या कीनो मलिन यानी अनपढ़ता ने हमें बहुत नीचे पहुंचाया है। इसलिए उन्होंने समतावादी लोकतांत्रिक राज्य 'बेगमपुरा शहर' की कल्पना करते हुए कहा था–ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न। छोट बड़े सब सम बसैं। रविदास रहे प्रसन्न।।

गुरु रविदास जी का ऐसा 'स्वराज्य' हमें तभी प्राप्त होगा जब हम बाबा साहब डा. अम्बेडकर के इन तीन मूल मंत्रों पर चलेंगे–'शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो।'

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपने पहले मंत्र में कहा है–शिक्षित बनो क्योंकि शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो इसे पीयेगा, वह दहाड़ेगा। आज हमारे समाज ने बाबा साहब के पहले मंत्र पर अमल करके नई पीढ़ी को शिक्षित बना लिया है, पर अभी दूसरे मंत्र संगठित हों, पर पूरी तरह अमल नहीं किया है। क्योंकि जिस दिन हम संगठित हो जायेंगे उस दिन कोई हमारी संगठन शक्ति के सामने हमारे साथ भेदभाव और दुर्व्यवहार नहीं कर सकेगा। जिस दिन हम सब विभिन्न जाति–उपजातियों में बंटे दलित समाज के लोग एकजुट हो जायेंगे, उस दिन अपने को सवर्ण व उच्च जाति का समझने वाले दबंगों को भी अपनी सोच व व्यवहार बदलना पड़ेगा। इसलिए सभी को पारस्परिक एकजुट होकर संगठित होने का आज से ही संकल्प लेना चाहिए।

सभी दलित–शोषित–उपेक्षित–वंचित लोगों के संगठित हो जाने के बाद बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा था–''संघर्ष करो।'' संघर्ष किसलिए? देश की सत्ता, सम्पदा, धन, धरती, शासन–प्रशासन में बराबरी के लिए और अपने हिस्से की भागीदारी मांगने के लिए, पाने के लिए, कब्जाने के लिए। उन लोगों के कब्जे से छीनने के लिए जो सदियों से वर्ण व्यवस्था के नाम पर देश व समाज की धन, धरती, सत्ता–सम्पदा, शासन–प्रशासन पर जबरदस्ती कुण्डली मारे बैठे हैं। वे कौन लोग हैं? इन बातों का खुलासा तब होगा जब देश में जाति जनगणना होगी, तभी दूध का दूध व पानी का पानी साफ नजर आयेगा। इसलिए देश में सामाजिक न्याय पाने के लिए जाति जनगणना बहुत जरूरी है। तभी अपने हिस्से की भागीदारी लेने के लिए हमें संघर्ष का मार्ग अपनाना होगा, तभी बाबा साहब डा. अम्बेडकर व गुरु रविदास जी का समाजवादी, लोकतांत्रिक स्वराज्य का सपना साकार होगा।

डा. सुमनाक्षर ने इस प्रादेशिक सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए प्रदेश महासचिव श्री दलाभाई राव, सिरोही जिलाध्यक्ष श्री नारायणलाल मेघवाल, जिला महासचिव श्री रामलाल परिहार, कोषाध्यक्ष हंसाराम रोहिन, पूर्व सरपंच श्री डुंगाराम मेघवाल आदि का धन्यवाद किया और आशा व्यक्त की कि अकादमी के कारवां को वे और आगे ले जायेंगे। जय भीम, जय भारत। •

दलित समाज की हकीकत का आईना है–दलित साहित्य

• प्रो. कालीचरण 'स्नेही' डी.लिट् (हिन्दी)

साहित्यकारों की भी अपनी रुचि–अभिरुचि अलग–अलग होती है। कोई वामपंथ से प्रभावित होकर रचनाएं करता है, तो कुछ साहित्यकार, बुद्ध और फुले–अंबेडकर से प्रभावित होकर रचनाएं करते हैं।

मेरी रुचि–अभिरुचि, बुद्ध–फुले और अंबेडकर के जीवन दर्शन में है, यही कारण है कि मेरा सारा साहित्यिक सृजन, इन्हीं युगपुरुषों के जीवन से प्रभावित और प्रेरित रहा है। मेरी रचनाओं में बहुजन नायकों की इच्छा– आकांक्षा और उनकी शिक्षाओं का असर देखा जा सकता है।

दलित साहित्य, बाबा साहब डा. अम्बेडकर से प्रभावित और प्रेरित है। सदियों से पीड़ित–शोषित दलितजनों की व्यथा–कथा, दलित साहित्य में संजीदगी के साथ अभिव्यक्त हुई है। दलितों ने अपनी अनुभूतियों को साहित्य में बहुत ही ईमानदारी के साथ रचा है। यही कारण है कि दलित साहित्य की कृतियों को विशाल पाठक समुदाय प्राप्त है।

"दलित साहित्य, आनंद और मनोरंजन का साहित्य नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति से मिली यातना और वेदना को परिवर्तनकामी स्वर में बदलने का साहित्य है। सम्पूर्ण जनमानस को संवेदनशील बनाने का साहित्य है।''

दलित साहित्य में, अनुमान, कल्पना तथा ईश्वरोपासना नहीं मिलेगी। दलित रचनाकार का अपना स्वयं का दुःख–दर्द, पीड़ा, आक्रोश और दलित समाज का खांटी सच, कविता–कहानी और उपन्यास के रूप में व्यापक स्तर पर सृजित हो रहा है। साहित्य की विविध विधाओं में, दलित रचनाकार खुद को अभिव्यक्त कर रहा है। मेरी रुचि कविता में सबसे अधिक है, क्योंकि कविता पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सबसे आगे हैं। कविता का, हमारे दिल–दिमाग पर स्थायी प्रभाव पड़ता है।

हिन्दी दलित साहित्य में दलित कविता को सर्वाधिक सशक्त विधा के रूप में माना जाता है। हिन्दी दलित कवियों की कविताओं ने समाज में परिवर्तन का माहौल पैदा किया है।

कविता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए मराठी दलित साहित्य के प्रख्यात कवि नामदेव ढसाल ने कहा है कि ''कविता मुझे आकर्षित नहीं करती, तो मैं बड़ा गैंगस्टर होता या फिर चकलाघर का मालिक।'' कविता कवि को बदलने के साथ ही सामाजिक बदलाव में भी अहम् भूमिका अदा करती आई है। यही कारण है कि कवियों को युगदृष्टा कहा जाता है। कविता, आदमी को मनुष्य बनाने में मददगार है।

"समता–स्वतन्त्रता और बन्धुता की स्थापना दलित कविताओं का मूल स्वर है, जो फुले अम्बेडकरवादी चिंतन एवं विचारधारा पर आधारित है। एक अर्थ में दलित कविता, अतीत और वर्तमान की सामाजिक एवं सांस्कृतिक आलोचना भी है। वर्चस्वशाली सभ्यता एवं संस्कृति के हजारों वर्ष के इतिहास को प्रश्नांकित कर साहित्य की अवधारणा और सौंदर्यबोध के मानदण्डों को अर्थांतरित कर दलित कविता ने नवीन स्वरूप दिया है। अम्बेडकरवादी दर्शन एवं विचारधारा से दलित चेतना का जन्म हुआ है।''

सामाजिक बदलाव के लिए कविता एक हथियार की तरह है, ऐसा हथियार, जो पढ़ने वाले को बिना लहूलुहान किए ही घायल कर देता है। ''दलित कविता मनुष्य से मनुष्य के बीच, एक समाज से दूसरे समाज के बीच की खाईंयों एवं दूरियों को पाटने का काम करती है। इसका मुख्य ध्येय समता कायम करना है। मनुष्य और प्रकृति के बीच नैसर्गिक रिश्तों के स्थायित्व की यें कविताएं हैं। इन कविताओं में अभिव्यक्त स्वाभिमान, सामुदायिकता अनुभव का बोध कराता है। ये कविताएं, अधिकार विहीन श्रमशील दलितों के वजूद की कविताएं हैं, साथ ही जुल्म के खिलाफ उनके आगाज की कविताएं हैं। दलित चेतना से लवरेज ये कविताएं, हिन्दू धर्म के 'गौरवमयी' तिलिस्म को भेदने की कविताएं हैं, धर्म जाल से मुक्ति की कविताएं हैं, जो हिन्दू व्यवस्था पर इतराने वालों को आत्मचिन्तन करने के लिए बाध्य करती हैं।''

डा. एन. सिंह ने कहा है कि ''कविता लड़ने पर उतारू, बेजुबान आदमी की आवाज है।'' कविता की मारक क्षमता अद्‌भुत है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, डा. एस.पी. 'सुमनाक्षर', कंवल भारती, असंगघोष, डा. श्यौराज सिंह बेचैन, डा. रजतरानी मीनू, डॉ. रजनी अनुरागी, डा. नीलम, डा. एन. सिंह जैसे दर्जन भर बड़े कवि, अपनी कविताओं के माध्यम से अम्बेडकरवादी आन्दोलन को लगातार धार दे रहे हैं। इस समय बहुजनों में जो सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना दिखाई दे रही है, उसमें बाबा साहब डा. अम्बेडकर

हिमायती
7 / अक्तूबर (प्रथम) 2024 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 30 सितम्बर, 2024

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

एवं मान्यवर कांशीराम साहब के साथ ही दलित साहित्य का, और उसमें भी दलित कविता का व्यापक प्रभाव है।

दलित कविता क्या है? इसका उत्तर है, दलित कविता, दलित समाज की व्यथा–वेदना, खीझ, इच्छा–आकांक्षा और छटपटाहट का रचनात्मक दस्तावेज है। दलितों पर हो रहे अमानुषिक अत्याचार तथा सवर्णी बर्बरता को दलित कवि पूरी शिद्दत के साथ समाज के सामने प्रस्तुत करता है। दलित कविता में ठाकुरों की ठकुराई, ब्राह्मणों की धूर्तता तथा अन्य सबल जातियों की आतंकी प्रवृत्ति का संज्ञान लिया गया है। गांवों में दलितों के प्रति पोथी पण्डितों का पुरातन रवैया बदला नहीं है, वे आज भी दलितों से वैसी ही नफरत और सामाजिक दूरी बनाए रखते हैं जैसी कि उनके पुरखों ने बना रखी थी। गांव के ठाकुरों की सामंती सोच आज भी बरकरार है। वे दलितों को अपना स्थायी गुलाम मानकर व्यवहार करते है। उनकी दृष्टि में दलितों के जीवन का कोई मूल्य नहीं है, उनके स्वभाव में वही शताब्दियों पुरानी जड़ता और दबंगई मौजूद है। दलित कविता में इनकी हूबहू अत्याचारी प्रवृत्ति को उकेरा गया है।

भारत के गांवों को इन मनुवादियों ने दलितों के लिए यातना शिविरों में तब्दील कर रखा है। दलित स्त्रियों की इज्जत आबरू को सवर्णों ने अपने पैरों तले रौंद रखा है। यही कारण है कि दलित कवियों ने अपनी कविताओं में इन बर्बर प्रकृति के अत्याचारियों के विरुद्ध तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है। दलित कवि मलखान सिंह की कविता 'सुनो ब्राह्मण' तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'ठाकुर का कुआं' इसी तरह की रचनाएं हैं।

"अब दलित भी धीरे–धीरे विद्रोही हो रहे हैं, जिसके संकेत कुछ दलित रचनाकारों की कविताओं में मिलने भी लगे हैं, जो इस सम्पूर्ण दुरावस्था का जिम्मेदार इस व्यवस्था को मानते हैं क्योंकि उस सामन्ती युग में तो दलित शोषण और अत्याचार के शिकार थे ही, लेकिन आज भी उन पर अत्याचारों में कमी नहीं आई है। यहाँ पर कानून अंधा हो जाता है, पुलिस तन्त्र नकारा हो जाता है। नेता इस स्थिति को दूसरे राजनीतिक दल को बदनाम करने के लिये एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं, इन सभी के लिए दलित व्यक्ति नहीं, 'वोट' होकर रह गया है।

दलित कविता में दलितों की अस्मिता और अस्तित्व को बचाने का साहसिक रचनात्मक प्रयास है। दलित समाज की हकीकत, यदि सही मायने में कहीं दर्ज हो रही है, तो वह दलित साहित्य ही है। गांवों में दलित बच्चों के प्रति सवर्ण शिक्षकों का रवैया कैसा है? कस्बाई थानों में तैनात सवर्ण पुलिस वाले, दलितों के प्रति किस तरह का व्यवहार करते हैं ? गांवों के जमींदारों का आतंक किस रूप में आज भी विद्यमान है? यह सब जानना समझना है, तो हमें दलित कवियों की कविताओं को पढ़ना होगा। इन कविताओं में 'दलित दुनिया' की दास्तान दर्ज है।

शहरी जीवन में दलितों के प्रति सवर्णों का रवैया कैसा है? राजनीति में दलित नेताओं की स्थिति क्या है? सरकारी विभागों में दलित कर्मचारी और अधिकारियों को किस कदर बेइज्जत होना पड़ता है, यह सब भी दलित कविता में दर्ज हो रहा है।

सत्ता की शतरंजी चालें और दलितों के प्रति सरकार का असली दृष्टिकोण किस तरह का है, इसकी भी अनुगूंज दलित कविताओं में सुनी जा सकती है। आरक्षण के प्रति सवर्णों का गुस्सा किस कदर है? इसका भी लेखा–जोखा दलित कविता में दर्ज किया जा रहा है। भारत का लोकतंत्र किस ओर जा रहा है? राजनीति में दलितों की क्या औकात है? संसदीय प्रणाली में दलितों को क्या और कितना हिस्सा मिल रहा है? यह सब भी दलित कविताओं में दर्ज हो चुका है। सारांश यह है कि भारत में दलितों की दशा और दुर्दशा को ईमानदारी के साथ दलित कवियों ने दलित साहित्य में समाविष्ट कर लिया है।

''साहित्य का काम लोरिक सुनाकर जनता को सुलाना नहीं है। साहित्य वह है, तो उसकी रोजमर्रा की जिन्दगी में घट रही घटनाओं को उसके सम्मुख रखे, बल्कि उन पर उनको राय बनाने में मदद ही नहीं करे, उसके कारणों की खोज कर उन्हें बेनकाब भी करे। जिससे जनता उसके विरुद्ध लामबन्द होकर संघर्ष करने को तत्पर हो सके। कुल मिलाकर साहित्य ही है जो आम आदमी के जीवन में परिवर्तन लाने की प्रेरणा दे सकता है, उसके सुख–दुःख में उसके साथ खड़ा रहता है।''

मुझे लगता है कि हिन्दी की समकालीन दलित कविता अपने दर्द भरे अतीत को आज के समय संदर्भों में रखकर विश्लेषित कर रही है, जो भविष्य की राह को दमदार करने का प्रयास ही है, अब दलित जनता और कवि यह जानने लगे हैं कि हमारी स्थिति को केवल राजनीतिक शक्ति ही बदल सकती है, जैसा कि डा. अम्बेडकर ने कहा भी था कि –''हम अनुभव करते हैं कि कोई दूसरा हमारे दुःख दर्द दूर नहीं कर सकता और जब तक हमारे हाथों में राजनीतिक शक्ति नहीं आ जाती, हमारे दुःख दर्द भी दूर नहीं हो सकते।'' लेकिन दलित वर्ग अभी तक भी अपनी शक्ति को पहचान नहीं पाया है, इसे बाबू

जगजीवन राम ने भी माना था। वे लिखते हैं, ''ये निरीह अनुसूचित जाति और जन जाति के लोग स्वयं अपनी शक्ति से परिचित नहीं हैं, और यह शक्ति है, इनकी अपार जनसंख्या।'' इस अपार जनसंख्या को संगठित करके अपने हक के लिये संघर्ष की प्रेरणा देना ही दलित कविता का उद्देश्य है। डा. चन्द्रकुमार वरठे ने अपनी पुस्तक की भूमिका में लिखा भी है कि ''मुझे लगता है कि भारतीय समाज के सदियों से घुन खाए जख्मी जिस्म का अगर कविता के द्वारा कुछ भी इलाज करने की कवि की इच्छा हो, तो उसे कार्ल मार्क्स और डा. अम्बेडकर के बताए रास्ते से जन–जन को परिचित करना होगा, सच्ची कविता चाहे जन की हो या मन की हो, उसके लिए सही रास्ता यही है।

इसलिए मुझे बार–बार लगता है कि ये दलित कवि, आज जो ''दर्द के दस्तावेज'' लिख रहे हैं, वे निश्चय ही इस वर्ग के लोगों के लिए एक दिन मशाल बनेंगे, जिसकी रोशनी में ये लोग अपना लक्ष्य स्पष्ट होता देख सकेंगे और उसे प्राप्त करने के लिए संघर्षशील हो सकेंगे, दलित कविता इसके लिए ही पूर्व भूमिका तैयार करने का प्रयास कर रही है।''

दलित साहित्यकारों को हिन्दी के मनुवादी साहित्यकार कभी पसन्द नहीं करते हैं, क्योंकि दलित साहित्यकारों ने इनके सवर्ण पुरखों के लिखे भेदभाव मूलक साहित्य और शास्त्रों को नकार दिया है। इनके तथाकथित ईश्वर को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया गया है, जिससे हिन्दुत्ववादी साहित्यकार बेहद गम और गुस्से में हैं। यही कारण है कि वे प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर दलित साहित्यकारों को कभी स्थान नहीं देते हैं। वे अपने साहित्यिक मंचों–संस्थानों एवं साहित्य अकादमी आदि में दलित साहित्यकारों को जाने से हर सम्भव रोकते रहते हैं। इसी कारण मनुवादी साहित्यकार, दलित साहित्य को सिरे से खारिज करने पर उतारू हैं लेकिन उनकी हर कोशिश अब नाकाम होती जा रही है।

दलित कविता, सभी भारतीय भाषाओं में लिखी जा रही है। मराठी, गुजराती, कन्नड़, तेलुगु आदि में लिखी जा रही, दलित कविताओं ने सामाजिक परिवर्तन के लिए उर्वर भूमि तैयार की है। हिन्दी के दलित कवियों ने अपने पूर्ववर्ती संत कवियों की काव्य परम्परा से तेज और ओज हासिल कर हिन्दी की काव्यधारा को ही बदल दिया है। अब हिन्दी कविता का इतिहास, दलित कविता के बिना नहीं लिखा जा सकता है। हिन्दी की प्रगतिशील काव्य परम्परा को यथार्थ की जमीन से जोड़कर दलित कवियों ने अत्यधिक सशक्त शास्त्र और जीवंत बनाया है। हिन्दी कवियों की लेखनी से सृजित दलित कविता अब विश्व फलक पर दस्तक दे चुकी है। मानवतावाद का परचम, दलित कवियों के काव्य में शान से फहरा रहा है। दलित कविता दलित साहित्य का प्रमुख अभिन्न अंग है। •

मुझे जीना है

हां मुझे जीना है...
दलितों के गौरवपूर्ण इतिहास
को वापस लौटाने तक
संस्कृति की प्राचीन अर्वाचीन
कड़ियों को जुड़ने तक
सदियों से दबे कुचले गये
दलितों की पीड़ा हरने तक
हां मुझे जीना है।

दलितों के स्वाभिमान को
जगाने तक
अपने अधिकारों के प्रति
सजग बनाने तक
प्राचीन भारत के वे
मूल शासन हैं यह बतलाने तक
हां मुझे जीना है...।
वर्णवाद, जातिवाद की घिनौनी
तस्वीर उतार फेंकने तक
मानव, मानव को बंधुत्व के
सूत्र में एक हो जाने तक
संगठन में ही शक्ति है
यह समझाने तक
हां मुझे जीना है...।
उनके सर्वांगीण अधिकारों
को दिलाने तक
राष्ट्रीय एकता के
सूत्र में बंध जाने तक
हां मुझे जीना है।

– श्रीमती कला मरमट, उज्जैन

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-110009
मो. 9810278936,
जय सुमनाक्षर 9891989175

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009